🚩 पोवार (पंवार) समाज के छत्तीस कुल 🚩

हमारी मूल जड़ • हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत • हमारी पहचान

36 कुलों से बने समाज रूपी इस पवित्र पुष्प को सहेजने, संजोने और संगठित रखने का आह्वान 🙏

इन 36 कुलों को हमारे पूर्वजों ने एक **पवित्र धाम** की तरह कहा है। इन 36 पंखुड़ियों के साथ एक समाज रूपी पुष्प हमारे पूर्वजों की विरासत है। इस विरासत में वीरता, एकता, संस्कृति और सद्भाव के भाव समाहित हैं। इस पुष्प को हमारे पूर्वजों ने सहेजकर और संगठित रखकर हमें सौंपा है और आज हमारी बारी है कि हम इस सांस्कृतिक एवं सामाजिक विरासत को संजोकर रखें। किसी भी हालत में इसे बिखरने नहीं देना है।

वर्तमान सामाजिक चुनौतियाँ और हमारा दायित्व:
वह नाम, वह संस्कृति, वह पहचान और वह समाज का ताना-बाना, जो हमारे 36 कुलों के बीच ही रहता है, उसे बनाए रखना है। आज संपूर्ण समाज को जगाने की जरूरत है। जिस प्रकार कई सामाजिक समस्याएँ—जैसे धर्मांतरण, अंतरजातीय विवाह, अन्य जातियों में मिलने के प्रयास, नैतिक पतन, और अपनी संस्कृति के प्रति लगाव में कमी—आज समाज के सामने खड़ी हैं, उनसे एकजुट होकर निपटने की आवश्यकता है।

यह तभी संभव होगा, जब हम अपनी सांस्कृतिक छत्तीस कुलों की विरासत पर गर्व करें। इन 36 संस्कारों से सजी हुई 36 कुलों की सांस्कृतिक विरासत को संजोकर रखना आवश्यक है। हमारे विवाह से लेकर, छठी और अन्य रीति-रिवाज जो हमारे ही अपने कुलों के मध्य होते हैं, उन्हें सहेजने और सँवारने की आवश्यकता है। सभी समाजजनों को मिलकर इन सामाजिक समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना होगा।

🚩 पोवार (पंवार) समाज के 36 कुल 🚩

1 **अम्बुले (अमुले)**	2 **बघेले (बघेल)**	3 **भगत**
4 **भैरम**	5 **भोएर**	6 **बिसेन**
7 **बोपचे**	8 **चौहान**	9 **चौधरी**
10 **डालिया**	11 **फ़रीदाले**	12 **गौतम**
13 **हनवत**	14 **हरिनखेड़े**	15 **जैतवार**
16 **कटरे** (गोंदिया-गोरेगांव क्षेत्र में देशमुख भी)	17 **कोल्हे**	18 **क्षीरसागर**
19 **पटले** (वारासिवनी-कटंगी क्षेत्र में देशमुख भी)	20 **परिहार**	21 **पारधी**
22 **पुण्ड**	23 **राहंगडाले**	24 **रणमत्त**
25 **रिनायत**	26 **राणा (राणे)**	27 **रणदेवा**
28 **रजहाँस**	29 **रावत**	30 **शरणागत**
31 **सहारे**	32 **सोनवाने**	33 **ठाकरे (ठाकुर)**
34 **टेम्भरे**	35 **तुरकर**	36 **येड़े**

⚔️ गौरवशाली ऐतिहासिक धरोहर एवं रामटेक का ऐतिहासिक प्रसंग

हमारी ऐतिहासिक धरोहर सदियों पुरानी और लिखित है। यह केवल एक नाम नहीं, बल्कि ऐसे संगठन और एकता का भाव है जो अनादि काल से वीर योद्धाओं के रूप में सहयोग करता रहा। प्राचीन काल में जहाँ भी धर्म और युद्ध का प्रसंग आता था, इन 36 योद्धाओं के संघ का आह्वान किया जाता था: "आओ, हमारा सहयोग करो।"

मध्य भारत के राजाओं ने भी इसी संघ को पुकारा। जब प्रभु श्री राम की पवित्र नगरी **रामटेक** में ये 36 योद्धा एकत्र हुए, तब इन्होंने यहाँ के स्थानीय राजाओं को मुगलों के अत्याचारों से मुक्त कराया और इस पूरे क्षेत्र को सुंदर, कृषि-संपन्न एवं धन-धान्य से परिपूर्ण बनाने में अतुलनीय योगदान दिया।

"हमारी विरासत सर्वोपरि है, समाज सर्वोपरि है, व्यक्ति या संगठन नहीं। जो अपने इतिहास और मूल पहचान से विमुख हो जाते हैं, वे अंततः स्वयं अपने पतन का कारण बनते हैं।"

यह 36 कुलीन पवित्र धाम ही हमारे समाज की मूल जड़ और पहचान है, जिस पर समाज की 36 पंखुड़ियों रूपी पुष्प का अस्तित्व टिका है। इसे हमें हर हाल में बचाकर रखना है; अन्यथा समाज बिखर जाएगा और आने वाली पीढ़ियों को हम वह मूल विरासत नहीं सौंप पाएँगे। इसे सहेजना और भावी पीढ़ियों तक पहुँचाना हम सभी का परम दायित्व है।

🚩 अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ 🚩